॥ॐ॥
॥श्री परमात्मने नमः ॥
॥श्री गणेशाय नमः॥

॥ श्री गोविन्दाष्टकम् ॥

विषय सूची

॥ श्री गोविन्दाष्टकम् ॥ 3

भवदीय :

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष
श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय: ॥

॥ श्री हरि ॥
॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री गोविन्दाष्टकम् ॥

श्रीमद भगवत पूज्यपाद आद्य शङ्कराचार्य प्रणीतम्

सत्यं ज्ञानमनन्तं नित्यमनाकाशं परमाकाशं
गोष्ठप्राङ्गणरिङ्गणलोलमनायासं परमायासम् ।
मायाकल्पितनानाकारमनाकारं भुवनाकार
क्ष्मामानाथमनाथं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥१॥

परम सत्य, स्वयंप्रकाश, अन्तरहित, अविनाशी, परमाकाश, परम प्रकाश रूप, ब्रजकी गोशालाओं के आङ्गण में "गोवत्सों के पीछे दौड़ने में चपल, परिश्रमसे रहित, कर्ता भोक्ता, सुखी दुखी होने से श्रमयुक्त, माया के सम्बन्ध से माने गये अनेक शरीरवाले, आकार से रहित, ब्रह्मलोक से लेकर पाताल पर्यन्त समस्त भुवनमय आकारवाले, पृथ्वी और लक्ष्मी दोनों के नाथ, और स्वतन्त्र श्रीकृष्ण परमात्मा को नमस्कार करो ॥ १॥ ॐ ॥

मृत्स्नामसीहेति यशोदाताडनशैशवसंत्रास
व्यादितवक्त्रालोकितलोकालोकचतुर्दशलोकालिम् ।

लोकत्रयपुरमूलस्तम्भं लोकालोकमनालोकम्
लोकेशं परमेशं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥२॥

दूध दही मक्खनादि समस्त खाद्यपदार्थयुक्त घर में मिट्टीको तुम खाते हो इस प्रकार यशोदा माता द्वारा की गई ताड़ना से बालोचित भययुक्त होकर अपना मुख खोलकर यशोदाको चौदहों लोकों के दर्शन करानेवाले त्रयलोकरूपी पुर के आधाररूप समस्त जगत को प्रकाशमय करनेवाले दूसरे के प्रकाश से प्रकाशित न होनेवाले सम्पूर्ण लोकों को प्रेरणा करनेवाले जगत के ईश्वर और ब्रह्मादि देवता ओं के विनियन्ता परमेश्वर श्रीकृष्ण परमात्मा को नमस्कार करो ॥ २ ॥ ॐ ॥

त्रैविष्टपरिपुवीरघ्नं क्षितिभारघ्नं भवरोगघ्नं
कैवल्यं नवनीताहारमनाहारं भुवनाहारम् ।
वैमल्यस्फुटचेतोवृत्तिविशेषाभासमनाभास शैवं
केवलशान्तं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ३॥

स्वर्ग के शत्रु रावणादि वीरों को मारनेवाले पृथ्वी के भार को हटानेवाले सद्गुरुरूप से संसारके जन्ममरणरूप रोग को मिटानेवाले मोक्षरूप मक्खन का भोजन करनेवाले तिसपरभी आहार से रहित स्वरूपसाक्षात्कार से सम्पूर्ण जगत को चिन्मात्रावशेष करनेवाले रागादि मलरहित शुद्ध चित्तवृत्ति की अवस्था में प्रगट होनेवाले कल्याणरूप (केवलशान्तम्) और दृश्य

प्रपञ्च के संसर्ग से रहित आनन्दकन्द श्री कृष्ण परमात्मा को, हे जीव, तुम नमस्कार करो ॥ ३ ॥ ॐ ॥

गोपालं प्रभुलीलाविग्रहगोपालं कुलगोपालं
गोपीखेलनगोवर्धनधृतिलीलालालितगोपालम् ।
गोभिर्निगदितगोविन्दस्फुटनामानं बहुनामानं
गोधीगोचरदूरं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥४॥

गौओं का पालन करनेवाले, सर्व सामर्थ्यवान होने से लीलार्थ शरीर धारण करके वेद का पालन करनेवाले पृथ्वी में लीन होनेवाले शरीर और इन्द्रियों का पालन करनेवाले गोपियों के साथ खेल करने के लिये गोवर्धनपर्वत को अंगुलीपर धारण कर अहीरों को प्यार करनेवाले वेदवाक्यद्वारा कहे गये गोविन्दादि अनेक नामोंवाले तथा इन्द्रिय और बुद्धि की शक्ति से परे अर्थात् अगम्य श्रीकृष्णपरमात्मा को, हे जीव, नमस्कार करो ॥ ४ ॥ ॐ ॥

गोपीमण्डलगोष्ठीभेदं भेदाऽवस्थमभेदाभं
शश्वद्गोखुरनिधृतोद्धृतधूलीधूसरसौभाग्यम् ।
श्रद्धाभक्तिगृहीतानन्दमचिन्त्यं चिन्तितसद्भावम्
चिन्तामणिमणिमानं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥५॥

गोपियों के समूह के साथ क्रीडा करनेवाले, गोप, गोपी, गोवत्सादि बहुभेदों से स्थित किन्तु वास्तव में अभेदान्वय से एकरस प्रकाशमान, निरन्तर गौओं के खुरों से उड़ी हुई धूली से पाण्डुवर्ण होने को अपना

सौभाग्य माननेवाले, श्रद्धा और भक्ति से ग्रहण किये जानेवाले विचारशक्तिसे परे, श्रुतियों द्वारा निश्चित सत्तावाले चिन्तामणि' के समान भक्तों के मन की अभिलाषा को पूर्ण करनेवाले अत्यन्त सूक्ष्म और परम आनन्द देनेवाले श्रीकृष्ण परमात्माको नमस्कार करो ॥ ५ ॥ ॐ ॥

स्नानव्याकुलयोषिद्वस्त्रमुपादायागमुपारूढं
व्यादित्सन्तीरथ दिग्वस्त्रा छुपादातुमुपकर्षन्तम् ।
निर्धेतद्वयशोकविमोहं बुद्धं बुद्धेरन्तस्थे ।
सत्तामात्रशरीरं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ६ ॥

स्नानमें व्याकुल स्त्रियों के वस्त्रों को लेकर के कदम्ब वृक्ष के ऊपर चढ़नेवाले , नग्न होने के कारण वस्त्रग्रहण करने की इच्छावाली गोपियोंको, वस्त्र देनेके लिये अपने समीप बुलानेवाले शोक और मोह दोनों का तिरस्कार करनेवाले ज्ञानवान् बुद्धि में स्थित रहनेवाले और तीनों काल में एकरस स्वरूपवाले श्रीकृष्ण परमात्मा को नमस्कार करो ॥ ६ ॥ ॐ ॥

कान्तं कारणकारणमादिमनादि कालघनाभास
कालिन्दीगतकालियशिरसि नृत्यन्तं बहुनृत्यन्तम् ।
कालं कालकलातीतं कलिताशेषं कलिदोषघ्नम्
कालत्रयगतिहेतुं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥७॥

परम सुन्दर प्रकृति का भी अधिष्ठान सबका कारण अन्य कारणरहित प्रलयकाल के मेघ के समान मनोहर, कालिन्दी में रहनेवाले नाग के फनपर बारबार नृत्य करनेवाले, जगत् के संहारकर्ता, काल से अतीत, सम्पूर्ण जगत् को बनानेवाले , कलियुग के दोषों का नाश करनेवाले, प्रातः मध्यान्ह और सायं इन तीनों संध्याओं के अथवा भूत भविष्यत् वर्तमान इन तीनों कालों के कारणभूत कृष्णचन्द्र को नमस्कार करो ॥ ७ ॥ ॐ ॥

वृन्दावनभुवि वृन्दारकगणवृन्दाराधितवन्देऽहं
कुन्दाभामलमन्दमेरसुधानन्दं सुहृदानन्दम् ।
वन्द्याशेषमहामुनिमानसवन्द्यानन्दपदद्वन्द्वं
वन्द्याशेषगुणाब्धि प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥९॥

वृन्दावनकी भूमि में रासक्रीड़ा के समय देवता ओं द्वारा पूजित और प्रशंसित सुमेरुप नाम क्रीड़ावाले कुन्द (चमेली) के पुष्प के समान प्रकाशित मन्द हास्य से अमृततुल्य आनन्द देनेवाले भक्त जनों को सुखरूप जगद्वन्दनीय नारदादि महामुनियों द्वारा आनन्दपूर्वक मन में ध्येयचरणकमलवाले शान्त्यादि समस्त सद्गुणों के आधारस्थान श्रीकृष्णचन्द्र को नमस्कार करो ॥ ८ ॥ ॐ ॥

गोविन्दाष्टकमेतदधीते गोविन्दार्पितचेता यो
गोविन्दाच्युत माधव विष्णो गोकुलनायक कृष्णेति ।
गोविन्दाङ्घ्रिसरोजध्यानसुधाजलधौतसमस्ताघो - गोविन्दं
परमानन्दामृतमन्तस्थं स समभ्येति ॥ ९ ॥

श्रीकृष्णचन्द्र में चित्तको अर्पण करके गोविन्द के चरणकमल के ध्यानरूप अमृत द्वारा समस्त पापों को नष्ट करके जो व्यक्ति हे गोविन्द, हे अच्युत, हे माधव, हे विष्णो, हे गोकुलनायक, हे कृष्ण इन नामों से पुकार कर इस गोविन्दाष्टक का प्रेमपूर्वक पाठ करता है वह भक्त परम आनन्दस्वरूप अमृतरूप, मोक्षरूप, तथा सर्वदा हृदय में स्थित गोविन्द को प्राप्त होता है ॥ ९ ॥ ॐ ॥

हरिः ॐ तत्सत्-ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

॥ इति श्री गोविन्दाष्टकम् संपूर्णम् ॥